इकाई 24 मेजबान/स्थानीय जनसमुदाय

इकाई की रूपरेखा

24.0 उद्देश्य

24.1 प्रस्तावना

24.2 स्थानीय लोगों के लिए अवसर

- 24.2.1 आर्थिक अवसर
- 24.2.2 विभिन्न संस्कृतियों के बीच आदान प्रदान
- 24.2.3 सांस्कृतिक गौरव का नवीनीकरण

24.3 स्थानीय लोगों की भागीदारी

- 24.3.1 सहभागिता की सीमा
- 24.3.2 भागीदारी : सच या झूठ

24.4 मेजबानों/स्थानीय लोगों पर दबाव

- 24.4.1 आर्थिक सुरक्षा और स्थानीय समुदाय
- 24.4.2 पर्यटन की सामाजिक कीमत
- 24.4.3 पर्यटन और पर्यावरणीय प्रभाव

24.5 पर्यटन और संस्कृति

- 24.5.1 स्थानीय प्रथाएं
- 24.5.2 भौतिक संस्कृति
- 24.5.3 नैतिक आचरण

24.6 सारांश

24.7 शब्दावली

24.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

24.0 उद्देश्य

निम्नलिखित बातों पर विचार करना इस इकाई का उद्देश्य है :

- पर्यटन के परिणामस्वरूप स्थानीय लोगों के लिए उपलब्ध अवसर ,
- स्थानीय सहभागिता का स्तर और पर्यटन उद्योग से लाभ, यदि कोई हो ,
- स्थानीय संस्कृति पर पर्यटन का प्रभाव और भौतिक दृश्य।

24.1 प्रस्तावना

पर्यटन अब कुछ अवकाश लेने का पर्याय बन गया है। इसे सामान्य तौर पर प्रवासियों की यात्रा और ठहराव और उससे उत्पन्न परिघटना और संबंधों के समुच्चय के रूप में देखा जा सकता है; यह याद रखना चाहिए कि पर्यटन की सीमा में स्थाई निवास शामिल नहीं होता है। इन पर्यटकों तथा स्थाई लोगों या जैसा कि पर्यटन मानव विज्ञान कहता है मेजबान/स्थानीय लोग तथा मेहमान जनसंख्या के मध्य परस्पर आदान प्रदान होना अनिवार्य है। यहाँ मेजबान से तात्पर्य स्थान विशेष के मूल निवासियों से है जहाँ पर्यटक जाते हैं। यह इकाई मेजबान या आतिथेय की प्राचीन व्याख्या से भी आगे जाती है

जिसमें न केवल सामाजिक पर्यावरण वरन भौतिक पर्यावरण भी सम्मिलित है। अत: पर्यटकों की यह यात्रा स्थानीय लोगों को न केवल आर्थिक अवसर उपलब्ध कराती है बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक और भौतिक पर्यावरण पर स्थाई प्रभाव डालती है किन्तु कभी कभी भौतिक पर्यावरण को बिगाड़ती भी है। इसलिए पर्यटन के दबावों और न्यूनतम सीमारेखाओं पर की गई परिचर्चा में मेजबान/स्थानीय लोगों तथा वह परिवेश जहाँ वह स्थित है बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। हम आने वाली परिचर्चा में इन्हीं बातों को समझने का प्रयास करेंगे।

24.2 स्थानीय लोगों के लिए अवसर

पर्यटन मेजबान या आतिथेय जन समुदायों के लिए विविध अवसर प्रदान कर सकता है। उदाहरणार्थ यह आर्थिक विकास तथा साथ ही साथ पारस्परिक सांस्कृतिक आदान प्रदान के लिए परिस्थितियाँ पैदा करता है। हालाँकि इन अवसरों से लाभ उठाते समय अतिथेय/स्थानीय लोगों की नजाकत या भंगुरता की क्षति का खतरा बना रहता है। इसलिए अनियंत्रित पर्यटन विकास के कारण ऐसे दबाव मेजबानों के मूलरूप को परिवर्तित करने का कार्य प्रारंभ कर देते हैं जो कभी कभी लाभ देने के बजाए हानि की ओर ले जाता है। इसलिए हमें इन अवसरों को अल्प/दीर्घ कालिक नुकसान के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए जो मेजबानों के सम्मुख पैदा हो सकती है।

24.2.1 आर्थिक अवसर

पर्यटन से कुछ प्रत्यक्ष लाभ होते हैं । यह स्थानीय लोगों के लिए रोजगार एवं अल्प आय के साधन उपलब्ध कराता है और उनके लिए (अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन द्वारा) विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। इससे स्थानीय समुदाय के जीवन स्तर में सुधार आता है और समग्र क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय आर्थिक विकास में भी योगदान दे सकता है। पर्यटन कार्यकलापों में निवेश का गुणक प्रभाव पड़ता है। स्थानीय दुकान से पर्यटक द्वारा खरीदी गई दस्तकारी से दुकानदार को आय होती है। वह इस आमदनी से भोजन खरीदकर खाता है और यदि इस क्रय विक्रय में आयात सम्मिलित हो तो आय का कुछ भाग देश के बाहर निकल जाता है किन्तु बचा हुआ धन खाद्यान बेचेन वाले की आय बन जाता है। यह धन फिर खर्च किया जाता है और यह आय और व्यय का क्रम चलता रहता है। आर्थिक गुणक की यह प्रक्रिया क्षेत्र एवं देश की सकल राष्ट्रीय आय की वृद्धि में सहयोग देता है। इसके अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में पर्यटकों द्वारा उपलब्ध कराए गए रोजगार और आय, विशेष कर नवयुवकों का प्रवसन रूक सकता है। पर्यटन के कारण पैदा होने वाले रोजगार के अवसर तीन प्रकार के होते हैं।

क) **प्रत्यक्ष रोजगार :** होटल आदि जैसी पर्यटन सुविधा के निर्माण से प्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न होता है। यह पूंजी निवेश उद्योग है जिससे मुख्य रूप से बाहरी लोग लाभान्वित होते हैं। फिर भी पर्यटन मौसमी रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है। बहुत से स्थानीय लोग पर्यटन के मौसम में पर्यटक गाइड के रूप में या पर्यटकों को विभिन्न परिवहन के साधनों (जैसे खच्चर, पालकी आदि) से लोगों को ले जाने का कार्य करते हैं।

ख) **अप्रत्यक्ष रोजगार :** पर्यटन के द्वारा अन्य आर्थिक क्षेत्रों जैसे कृषि, मछली पालन कई प्रकार के निर्माण उद्योग, हस्तकला, परिवहन आदि के विकास और विस्तार से अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होता है।

ग) **प्रेरित रोजगार :** पर्यटन की आय से स्थानीय लोगों द्वारा खर्च की गई आय से रोजगार के ये अवसर पैदा होते हैं। पर्यटन ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को रोजगार दे सकता है और कई परम्परागत समाजों में महिलाओं के प्रशिक्षण एवं रोजगार द्वारा उनके उद्धार का अवसर भी पैदा हो जाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पर्यटन निश्चित ही रोजगार और आय के अवसर पैदा करता है। किन्तु पर्यटन और रोजगार के विषय पर उपलब्ध साहित्य पर ध्यान देने से कुछ क्षुब्ध कर देने वाले तथ्य सामने आते हैं। सर्वप्रथम, पर्यटन के आय उत्पन्न करने वाले प्रभाव और रोजगार के उत्पन्न होने के बीच निकट का संबंध है परंतु इनका पारस्परिक संबंध स्पष्टता से उभ नहीं सका है। इसका अर्थ यह है कि उद्योग से होने वाले अधिक लाभ के अनुरूप प्रत्यक्ष रूप से नौकरियों के अनुपातिक अवसरों की वृद्धि से नहीं होती है। दूसरी बात यह है कि पर्यटन के कारण उत्पन्न रोजगार आम तौर से श्रम सम्बद्ध होने के कारण निम्नस्तरीय आय वाला होता है। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है पर्यटन रोजगार अधिकतर मौसमी होता है।

24.2.2 विभिन्न संस्कृतियों के बीच आदान प्रदान

पर्यटन क्षेत्र विशेष के निवासियों और वहाँ जाने वाले पर्यटकों के लिए एक दूसरे की संस्कृति को समझने और उसके बारे में और अधिक जानने के अवसर प्रदान करता है जो बेहतर पारस्परिक समझ और ज्ञान का कारण बनता है या कम से कम एक दूसरे से भिन्न मूल्य व्यवस्थाओं तथा परम्पराओं के प्रति सहनशीलता पैदा करता है। भारत जैसे बहु जातीय देश में घरेलू पर्यटन लोगों को पारस्परिक सांस्कृतिक बोध के अवसर प्रदान करता है और परिणामस्वरूप देश के विविध जनसमुदायों में राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा करता है।

किंतु विभिन्न संस्कृतियों का परस्पर मिश्रण समाज में कुछ समस्याएं भी पैदा कर सकता है। जैसे तीसरी दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों की बढ़ती उपस्थिति को मानवशास्त्री सांस्कृतिक संक्रमण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण तत्व मान रहे हैं जहाँ लोग एक दूसरे के परस्पर सम्पर्क में आते हैं और एक दूसरे की सांस्कृतिक विरासत को ग्रहण करते हैं। इस मामले में, पर्यटन द्वारा लाए गए सशक्त पाश्चात्य विचार एवं व्यवहार की उपस्थिति का प्रभाव 'दूर्बल' संस्कृति पर पड़ सकता है और वह उस पर हावी हो सकता है। अत: हम यह पाते हैं कि तीसरी दुनिया के लोग फूहड़ ढंग से पाश्चात्य जीवन शैली और आदतों की नकल करते हैं और इस प्रक्रिया में अपने पारम्परिक सिद्धांतों एवं प्रथाओं को विकृत कर बैठते हैं।

24.2.3 सांस्कृतिक गौरव का नवीनीकरण

पर्यटन आतिथयों/स्थानीय लोगों में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। यह गौरव अनुभव करने की भावना उस समय और भी सशक्त होती है जब की पर्यटक उनकी प्रशंसा करते हैं और उन्हें पसन्द करते हैं। इस प्रकार पर्यटन अल्पसंख्यक सांस्कृतियों समुदायों को अपनी अलग पहचान बनाए रखने के योग्य बनाता है।

सांस्कृतिक गौरव का नवीनीकरण समुदाय को अपनी अलग संस्कृति और पहचान के प्रति चेतना जागृत करता है और वह एक समुदाय के रूप में व्यवहार करने लगते हैं। एक वर्ग के लोगों का अन्य वर्ग/वर्गों से स्वयं की पृथक पहचान के उद्देश्य से अपनी संस्कृति के किसी पक्ष का आत्मपरक सांकेतिक या प्रतीकात्मक उपयोग उनकी अपकेन्द्री प्रवृतियों का साधन बन सकता है। यदि पर्यटन विकास की प्रकृति ऐसी हो कि स्थानीय समुदाय को स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने से वंचित कर दिया जाए और नगर तथा देहात के मध्य विकास का अन्तर बढ़ता रहे तो इसकी संभावना और अधिक हो जाती है।

बोध प्रश्न 1

1) क्या पर्यटन आतिथेय या मेजबान समुदाय को कोई आर्थिक लाभ उपलब्ध कराता है ? इस संबंध में अपने विचारों से अवगत कराइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन और सांस्कृतिक गौरव के नवीनीकरण के बीच क्या संबंध है ? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

24.3 स्थानीय लोगों की भागीदारी

इस भाग में अपने क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों में स्थानीय जनसंख्या की भागीदारी का विवेचन किया गया है।

24.3.1 सहभागिता की सीमा

पर्यटन स्थानीय जनसंख्या को कई तरह से सम्मिलित करता है।

प्रथम श्रेणी में वह लोग सम्मिलित हैं जो निरंतर और प्रत्यक्ष रूप से पर्यटकों के सम्पर्क में हैं : खान पान व्यापार, परिवहन, दुकानों, यात्रा एजेंसी आदि में लगे कर्मचारी। वे पर्यटन को इसलिए सहयोग देते हैं क्योंकि वे उस पर आश्रित हैं और शायद वह उसके बिना बेरोजगार हो जाएंगे। इसलिए वह पर्यटकों का स्वागत करते हैं। उनका व्यवहार स्वाभाविक आतिथ्य के आधार पर या फिर सेवारत होने की प्रसन्नता (जैसा कि अक्सर कहा जाता है) के आधार पर निर्धारित नहीं होता बल्कि केवल पैसा कमाने की इच्छा के आधार पर निर्धारित होता है।

दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत वह जनसमूह आते हैं जो प्रत्यक्ष तौर पर और निरंतर पर्यटकों के सम्पर्क में रहते हैं किंतु अपनी आय का मात्र आशिंक भाग ही पर्यटन से प्राप्त करते हैं क्योंकि वह केवल पर्यटन के मौसम में ही पर्यटन से सम्बद्ध रहते हैं। वे पर्यटक केंद्रों पर या उसके निकट रहते हैं और विभिन्न प्रकार के कार्यों जैसे खेती, हस्तशिल्प की बिक्री, और प्रदर्शनीय कला के उत्पादन में लगे रहते हैं। उनका पर्यटन से जुड़ा होना और उसके फलस्वरूप व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित नकारात्मक प्रभावों का ज्ञान अक्सर उनके पर्यटन के प्रति स्वभाव को आलोचनात्मक बना देता है। इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि इस वर्ग के सदस्य पर्यटन से होने वाले अतिरिक्त लाभों का अनुमान लगा लेते हैं जैसे कृषकों के लिए अतिरिक्त आय। किन्तु वह उसके कारण होने वाली हानियों जैसे उनके निजी जीवन में हस्तक्षेप एवं पर्यावरणीय क्षति के प्रति अधिक आलोचनात्मक रहते हैं।

तीसरी श्रेणी उन लोगों की है जो स्थानीय संभ्रांत अति विशिष्ट वर्ग से सम्बद्ध हैं और पर्यटन के विकास से अधिकतम लाभ अर्जित करते हैं क्योंकि वह वित्तीय दृष्टि से समर्थ होने के कारण पर्यटन की गतिविधियों में धन लगाने में सक्षम हैं। यह वर्ग प्रभावशाली ढंग से पर्यटन को समर्थन देता है।

चौथा वर्ग स्थानीय लोगों का बड़ा वर्ग है जिनका पर्यटकों से सम्पर्क नहीं है या वह उन्हें केवल सरसरी तौर से आते जाते देखते हैं यहाँ विविध प्रकार के व्यवहार संभव हैं जैसे स्वीकृति, अस्वीकृति रुची उदासीनता। इनमें से अन्तिम बहुत आम हैं।

एक और वर्ग है जिसमें वे नागरिक सम्मिलित हैं जो पर्यटन का विरोध करते हैं। कभी कभी यह विरोध संगठित रूप में होता है। यह वर्ग पर्यटन से होने वाली क्षति की ओर इश्तेहारों और सम्बद्ध अधिकारियों को भेजे गए आवेदनों द्वारा ध्यान आकर्षित कराने का प्रयास करते हैं और कभी कभी प्रदर्शनों द्वारा विरोध प्रकट करते हैं।

24.3.2 भागीदारी : सच या झूठ

गत 20-30 वर्षों में जिस प्रकार का पर्यटन हमारे यहाँ विकसित हुआ उसने स्थानीय जनसंख्या को बाहरी व्यापार और पर्यटकों के हितों के लिए उपयोगी बना दिया। हम में से अधिकांश लोगों के लिए अत्यंत निराशाजनक बात यह हुई कि पर्यटक उद्योग का मनोविज्ञान और समाजशास्त्र अभी तक पर्यटक दृष्टिकोण और व्यवहार्य से सम्बद्ध रहा और मेजबान जनसमुदाय की सम्पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई है। ऐसा इसलिए हुआ कि पर्यटन का प्रमुख उद्देश्य क्षेत्र/देश की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक सम्पदा का दोहन करना रहा है और वहाँ के लोग की कोई अहमियत नहीं रह गई। स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक गतिविधियाँ केवल पर्यटक बाजार में पर्यटन को प्रोत्साहित करने और बेचने के लिए ही दरकार होती है।

ईमानदारी के साथ यह कहा जा सकता है कि यह स्थिति सम्पूर्ण रूप से बाहरी स्वार्थों की पैदा की हुई नहीं है। आतिथेय जनसंख्या भी आंशिक रूप से इस उपेक्षा के लिए दोषी है।

पर्यटन के प्रमुख लक्ष्य वह क्षेत्र हैं जहाँ मानव एवं भौतिक संसाधन दोनों ही सस्ते दामों में उपलब्ध हों। ऐसे क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर अधिसंरचनात्मक सुविधाओं पर निवेश ऐसा प्रलोभन है जो स्थानीय लोगों को पर्यटन प्रोत्साहकों के इस वचन पर विश्वास करने को विवश करता है कि पर्यटक से प्राप्त राजस्व उनके क्षेत्र में विशेष कर और सामान्य रूप से और सम्पूर्ण देश में विकास और आधुनिकीकरण को बहुत तेज कर देगा। जबकि वास्तविकता यह है कि पर्यटन का विकास स्थानीय लोगों के समझ से परे होता है। बहुत कम स्थानीय लोग इसमें बराबर के साझेदार होते हैं और यह अपवाद चालाक व्यापारियों या विशिष्ट वर्ग के लोगों तक सीमित होता है। स्थानीय लोगों को यह समझाया जाता है कि उन्हें बाजार के अनुरूप होना चाहिए अर्थात केवल उन्हीं चीजों का उत्पादन करना चाहिए जो बिकती हैं। अतः स्थानीय लोगों को ही पर्यटकों के अनुकूल स्वयं को बदलना पड़ता है। वह किसी और तरह से कार्य नहीं कर सकते। कोई इस बात की चिंता नहीं करता कि उनसे पूछा जाए कि कहीं ये गतिविधियां उनकी मान्यताओं से टकराती तो नहीं या उनके विचारों के प्रतिकूल तो नहीं है। यह वह अत्यंत सामान्य विधि है जिसके द्वारा मेजबान जनसंख्या पीछे धकेल दी जाती है।

पर्यटन के घातक विकास में स्थानीय लोगों की भागीदारी इस प्रकार है कि किसी विशेष क्षेत्र में यह विकास वास्तविक नहीं होती बल्कि इसका आभास मात्र होता है। ऐसा इसलिए भी होता है कि जो कुछ भागीदारी स्थानीय जनसंख्या आर्थिक गतिविधियों के रूप में करती है उसमें उसकी भागीदारी कम और बाहरी लोगों की भागीदारी ज्यादा होती है और लाभ का अधिकांश हिस्सा भी उन्हीं के पास चला जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन में मेजबान जनसंख्या की भागीदारी के स्तर की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन प्रोत्साहकों के बाहरी व्यापार में स्थानीय जनसंख्या किस प्रकार सहयोग देती है ? विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

24.4 मेजबानों/स्थानीय लोगों पर दबाव

स्थानीय लोग/मेजबान गत कुछ दशकों में जिस प्रकार हाशिए पर जा खड़े हुए हैं उसने वास्तव में पर्यटन के आगामी विकास की संभावना को संकट में डाल दिया है। हमें इन दबावों को समझ लेना चाहिए।

24.4.1 आर्थिक सुरक्षा और स्थानीय समुदाय

इसमें कोई संदेह नहीं है कि पर्यटन स्थानीय समुदाय को रोजगार और आय प्रदान कर एक सीमा तक आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है और कर रही है। मोटे तौर पर लगाए गए एक अनुमान के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में लगभग एक करोड़ व्यक्ति पर्यटन उद्योग में कार्यरत हैं और कई करोड़ लोग अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग पर गुजारा करते हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटन का एक और आयाम है। वह औद्योगिक शहरी क्षेत्रों और कृषीय ग्रामीण क्षेत्रों के बीच की आर्थिक खाई को पाटने की संभावनाएं प्रस्तुत कर सकता है। अत: अक्सर इसे ग्रामीण क्षेत्रों से निर्गमन को मन्द करने वाला और उस क्षेत्र को विकसित करने वाला आर्थिक रामवाण समझा जाता है जहाँ अपनी प्राकृतिक सम्पदा के अतिरिक्त बेचने के लिए कुछ नहीं है।

उपर्युक्त बातों के प्रकाश में कहा जा सकता है कि पर्यटन आतिथेय समुदाय के लिए एक सीमा तक आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। किन्तु इस सिक्के का एक दूसरा पहलू भी है जिसकी राजनैतिक परिचर्चाओं में शायद ही कभी चर्चा की जाती हो। पर्यटन में रोजगार अधिकांशत: आकर्षक नहीं होते हैं। कार्य की परिस्थितियाँ कठोर, कार्य का समय अनियमित होता है। पर्यटन के मौसम में कार्य का भार इतना बढ़ जाता है कि नियत समय में देर तक काम करना लगभग अनिवार्य हो जाता है और काम करने वाला अतिथियों की दया का पात्र होता है। दूसरी ओर आय औसत से भी कम होती है। बहुत सी नौकरियों में किसी प्रकार के कौशल की जरूरत नही होती है और घटिया समझी जाती है जैसे परोक्ष में हो रहे कार्य अर्थात रसोई या सफाई के कार्य। पर्यटन अप्रसन्नता और नैराष्य की ओर भी ले जाता है क्योंकि पर्यटन व्यापार में धन शहर के व्यापारिक संस्थानों से आता है और उसमें अधिकांश अधिशेष वापस वहीं चला जाता है।

इसके अतिरिक्त आर्थिक विश्लेषण से यह बात सामने आती है कि पर्यटन में निवेश करने से आय में गुणक प्रभाव से वृद्धि होती है। इस आर्थिक गुणक से सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है। परंतु निर्विवाद रूप से यह साबित हो चुका है कि सकल घरेलू उत्पाद में साधारण सी वृद्धि का अर्थ विकास नहीं है। अत: पर्यटन स्थल में असंतुलित आर्थिक वृद्धि तो हो सकती है किंतु यह विकास नहीं है। यह भी प्रमाणित है कि पर्यटन से आवश्यक वस्तुओं, अचल सम्पति और परिवहन की कीमतों में वृद्धि होती है जिसके कारण मेजबान समुदाय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

24.4.2 पर्यटन की सामाजिक कीमत

जैसा इस इकाई में पहले बताया जा चुका है पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों के विषय में जानने और समझने का अवसर प्रदान करता है। यह पर्यटकों के द्वारा आतिथेय संस्कृति के अवसर का मूल्यांकन के अवसर उपलब्ध कराता है जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय लोगों का अपनी संस्कृति के प्रति गौरव का अनुभव होता है। किंतु इसके साथ ही साथ पर्यटक प्रोत्साहन की सामाजिक लागत बहुत अधिक है जिसका तुलनात्मक उल्लेख कहीं नहीं होता।

पर्यटन से आतिथेय समुदाय के समाज में गंभीर परिवर्तन होता है। इससे उनमें पर्यटकों की उपभोक्ता आदतों और व्यवहार की नकल करने की इच्छा जागृत करता है यह अपने ही लोगों में असंतोष पैदा करता है, यहाँ तक कि वह समर्पण कर देता है क्योंकि स्थानीय लोगों की अपेक्षा पर्यटकों का जीवन स्तर बेहतर होता है। यह उनमें हीन भाव, कुंठा आदि पैदा करता है।

यही नही पर्यटन साहित्य में इस तथ्य को उजागर किया जाता है कि यह उद्योग कामवासना, बाल वेश्याक्रम, विभिन्न प्रकार के अपराधों और संगठित जुए की वृद्धि से संबंधित है। भारत में इसके प्रमुख उदाहरण कुछ तटीय क्षेत्र हैं जहाँ पर्यटकों के आने के कारण सामाजिक पतन सुधरने की सीमा से कहीं आगे निकल चुका है। यही अंत नहीं है बल्कि बहुत सी ऐसी जगहें भी मौजूद हैं जहाँ पर्यटन और अपराधों की वृद्धि में सीधा संबंध है।

पर्यटन कुछ बहुत गंभीर बीमारियों के प्रसार का साधन भी है पर्यटकों के आने और वेश्यावृत्ति में वृद्धि के सीधे संबंधों को देखा जाए तो ऐड्स का भय स्थानीय समुदाय के सिरों पर मंडराता रहेगा। पर्यटन में स्थानीय प्रथाओं, परम्पराओं और मानकों को विकृत करने की प्रवृत्ति पाई जाती है जिसके परिणामस्वरूप पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन विघटित होता है। यह कभी कभी भाषा और सांस्कृतिक मानकीकरण आदि में विकृति पैदा करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पर्यटन निश्चित रूप से थोड़ी आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है किंतु इसके लिए बहुत बड़ी सामाजिक कीमत चुकानी पड़ती है। इसके अतिरिक्त इन बुराइयों को आमतौर से छिपाया जाता है या उसका रूप बदल कर प्रस्तुत किया जाता है। कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है जैसे तर्क इन बुराइयों के समर्थन में प्रस्तुत किए जाते हैं।

24.4.3 पर्यटन और पर्यावरणीय प्रभाव

पर्यटन यदि पूर्ण रूप से नियोजित और नियंत्रित हो तो पर्यावरण के रखरखाव और विकास में कई प्रकार से सहयोग दे सकता है। जैसे पर्यटन महत्वपूर्ण प्राकृतिक क्षेत्रों के संरक्षण और उद्यानों तथा आरक्षित क्षेत्रों के विकास, जिसमें राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय उद्यानों की स्थापना भी शामिल है, के लिए धन उपलब्ध कराने और उन्हें उचित ठहराने में सहयोग दे सकता है क्योंकि वे पर्यटकों के लिए आकर्षण केंद्र हैं। ये उद्यान काफी हद तक उपयुक्त पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त समुद्री संरक्षण (जैसे अण्डमान) बहुत ध्यान आकर्षित कर रहा है क्योंकि वह पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण आकर्षण है। पर्यटन पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण के लिए भी प्रोत्साहन देता है और धन उपलब्ध कराने में सहयोग करता है।

किंतु पर्यावरण पर पर्यटन के निषेधात्मक प्रभाव इन लाभों को निरर्थक कर देते हैं। फिर भी जहाँ तक भारत का प्रश्न है (इसे सम्पूर्ण तीसरी दुनिया का प्रश्न भी कहा जा सकता है) पर्यटन के फलस्वरूप होने वाले पर्यावरणीय असंतुलन का मुकाबला करने की कोई पर्याप्त सुविधा यहाँ उपलब्ध नहीं है। अत: अधिकांश पर्यटन स्थलों पर हम निम्नलिखित प्रकार का प्रदूषण पाते हैं :

जल प्रदूषण : दोषपूर्ण मलजल निस्सरण, होटलों, सैरगाहों आदि में मलबा हटाने के खराब प्रबंधन के कारण जल दूषित हो जाता है क्योंकि इनकी निकासी निकटवर्ती नदी, झील या समुद्र में कर दी जाती है।

वायु प्रदूषण : पेट्रोल और डिजल से चलने वाली गाड़ियों (कार, बस और मोटर साइकिल) के अधिक उपयोग के कारण वायु प्रदूषण फैलता है । जो पर्यटन क्षेत्र केवल सड़क मार्ग से जुड़े हैं वहाँ इन वाहनों का अपेक्षाकृत ज्यादा प्रयोग होता है।

मलबा निपटारे की समस्या : मलबे की कटाई , होटलों, रेस्तरांओं और मनोरंजन स्थलों से अनुचित ढंग से ठोस मलबे के निपटारन के कारण चारों ओर गंदगी फैलती है। इसके अलावा इससे कृमि रोग तथा प्रदूषण जैसी पर्यावरणीय स्वास्थ्य समस्याएं पैदा होती हैं।

पारिस्थितिक विघटन : प्राय: देखा गया है कि पर्यटकों द्वारा भंगुर पर्यावरण का अति उपयोग पारिस्थितिक क्षति की ओर ले जाता है। उदाहरणार्थ समुदायों के स्थानीय मार्ग उन घोड़ों के रौंदने से क्षति ग्रस्त हो जाते हैं जो मनोरंजन के लिए कुछ तटीय और पहाड़ी क्षेत्रों में उपयोग किए जाते हैं। स्कीइंग करने के लिए ढालों पर वृक्षों की कटाई करने से भूमिक्षरण, भूस्खलन और हिम स्खलन की संभावना बहुत बढ़ जाती है। यदि अनियंत्रित फोटोग्राफी की जाए या पशुओं को कुछ खिलाया जाए तो पशुओं के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। पर्यटन विकास के कारण अतिक्रमण से उनका आवास स्थल अस्त व्यस्त हो जाता है या वास स्थान घट जाता है। तटीय एवं पर्वतीय पर्यावरण विशेष रूप से अति उपयोग या अनुचित विकास के कारण असुरक्षित है। पर्यटकों द्वारा निशानी के तौर पर ले जाने के लिए आवश्यकता से अधिक संग्रह या संकटापन्न प्रजातियों की ललक, समुद्री शंख, मूंगा, कछुए की खोपड़ी और ऐसी ही अन्य वस्तुओं का स्थानीय लोगों द्वारा पर्यटकों के हाथों बेचा जाना इन प्रजातियों को समाप्त कर सकता है। नौकाओं एवं जहाजों के लंगर से मूंगे का टूटना एक प्रमुख समस्या बन गई है जैसा कि अण्डमान एवं निकोबार द्वीपों में देखा जा सकता है।

इस प्रकार की पर्यावरणीय क्षति आतिथेय क्षेत्र/अंचल में किसी भी प्रकार के पर्यटन विकास को बाधित कर देती है हालाँकि वह इसके बावजूद सीमित आर्थिक लाभ के लिए पर्यटकों को आमंत्रित करते हैं। उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य स्पष्ट हो चुका है कि सीमित आर्थिक सुरक्षा और लाभ के नाम पर स्थानीय लोग असीमित सामाजिक व पर्यावरणीय नुकसान सहन करते रहते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) आतिथेय या मेजबान जन समुदाय के लिए पर्यटन किस प्रकार की सुरक्षा उपलब्ध कराता है और क्या आर्थिक आधार पर उसे उचित ठहराया जा सकता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) इस सुरक्षा की कौन सी सामाजिक कीमत चुकानी पड़ती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यटन का पर्यावरण पर लाभकारी प्रभाव पड़ता है। आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

24.5 पर्यटन और संस्कृति

स्थानीय लोगों और पर्यटकों की मुठभेड़ तीन मुख्य परिस्थितियों में होती है; एक तो जहाँ कोई पर्यटक कोई सामान या सेवा आतिथेय से मोल प्राप्त कर रहा है, दूसरे तब जब पर्यटक और आतिथेय एक दूसरे को साथ साथ पाते हैं (जैसे समुद्र तट पर या नाइट क्लब में) और जहाँ दोनों परस्पर बदली जाने वाली वस्तुओं या विचारों सहित आमने सामने होते हैं। इस प्रकार का कोई भी परस्पर कार्यकलाप दोनों को प्रभावित करता है विशेष रूप से संस्कृति के क्षेत्र में। हमारा सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक ढाँचा उस अनेक मुख वाले राक्षस से बहुत अधिक प्रभावित होता है जिसे जनपर्यटन कहते हैं। हम निम्नलिखित तीन उप भागों में संस्कृति पर पर्यटन के प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

24.5.1 स्थानीय प्रथाएँ

पर्यटन देश/क्षेत्र की प्रत्येक सम्पत्ति अर्थात सांस्कृतिक सम्पत्ति या प्राकृतिक सम्पत्ति को पर्यटक बाजार में बिकनेवाले माल में बदल देता है। एक सीमा तक इस प्रक्रिया से स्थानीय सांस्कृतिक गतिविधियों को आर्थिक समर्थन प्राप्त होता है। इसके तहत स्थानीय संगीतकारों की सहायता की जाती है या सांस्कृतिक शिल्पकृति आदि बनाने में भी निवेश किया जाता है अन्यथा जो सार्वभौमीकरण (एकल अर्थव्यवस्था, एकरूप संस्कृति) के आक्रमण के कारण लुप्त हो सकता है। किंतु पर्यटकों के आगमन और बाजार पर इसके पड़ने वाले प्रभाव के कारण पर्यटकों की माँग को पूरा करने के लिए देशी कला के स्वरूप और प्रकृति को परिवर्तित किया जाने लगा। घरेलू पर्यटक नए नए अनुभव प्राप्त करने के लिए आते हैं। उनकी रुचि स्थानीय संगीत सुनने और कुछ जातीय/जनजातीय समुदायों के अनुष्ठानों नृत्यों को देखने में होती है। रंग बिरंगी विवरणिका पर्यटकों आतिथेय समाज के अतीत के मौलिक परिवेश को जाने का वचन देती है। उनके सामने सब कुछ ऐसे परोसे जाने का वचन दिया जाता है मानो इतिहास दुहराया जा रहा हो। संस्कृति का यह व्यापारीकरण पैसा कमाने के लिए है न कि निजी विश्वास या संतोष के लिए। किसी विशेष समुदाय द्वारा किया जाने वाला नृत्य उनसे सम्बद्ध देवता में उनके अटल विश्वास के लिए किया जाता था।

24.5.2 भौतिक संस्कृति

सांस्कृतिक पुनर्जागरण या ह्रास का सबसे प्रत्यक्ष संकेत तीसरी दुनिया के समाजों में पारस्परिक कला की दशा में प्रतिबिंबित होता है। पर्यटक हस्तशिल्प के बाजारों में वृद्धि ने स्थानीय उत्पादन को नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों ही दिशाओं में प्रेरित किया है।

बहुत से सकारात्मक प्रभावों में से एक निस्संदेह यह है कि कई प्रकार की नष्ट होती हुई पारम्परिक कलाओं को पर्यटकों के आनेवाले धन से बढ़ावा मिला है। दूसरी ओर हस्तशिल्प के तैयार बाजार के दबाव मात्र से ही कौशल और 'एयर पोर्ट आर्ट' कहलाई जानेवाली सस्ती नकल के उत्पादन के कारण गुणवत्ता में गिरावट आई है। कुछ पर्यवेक्षकों का दावा है कि इस संस्कृति की आवश्यकता से अधिक बिक्री से वास्तविक वस्तु इतनी विकृत और रूपांतरित हो गई है कि गोआ और राजस्थान जैसे राज्यों के शिल्पी परम्परागत प्रारूप, आकार और प्रकार भूल चुके हैं।

24.5.3 नैतिक आचरण

स्थानीय लोगों पर पर्यटन के प्रभाव के विषय में लिखे विस्तृत साहित्य से यह स्पष्ट है कि पर्यटकों के आगमन में वृद्धि और यौन विक्रय (वेष्यावृत्ति), विभिन्न प्रकार के अपराधों और संगठित जुए में होने वाली वृद्धि से सीधा संबंध है।

विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले पर्यटकों का स्थानीय निवासियों पर और विशेष रूप से नौजवानों पर पड़ता है और इससे उनके नैतिक मूल्यों और सोचने विचारने के ढंग में अंशत: या पूर्णत: परिवर्तन आता है। इससे एक समुदाय की विभिन्न पीढ़ियों में टकराव भी हो सकता है और उनके बीच सोचने विचारने के दृष्टिकोण का अन्तराल बढ़ सकता है। इससे सांस्कृतिक चरित्र, आत्म सम्मान और सम्पूर्ण सामाजिक पहचान का ह्रास हो सकता है क्योंकि दौलतमन्द और प्रतीयमान रूप से सफल तड़क भड़क से परिपूर्ण पर्यटकों के साथ आई विदेशी संस्कृति का सीधा प्रभाव स्थानीय समाज पर पड़ता है। अबतक आपको यह भली भांति स्पष्ट हो गया होगा कि मेजबान संस्कृति की परवाह किए बिना पर्यटन के विकास से जो आर्थिक लाभ होता है वह इसके लिए चुकाई गई सामाजिक कीमत से काफी कम होता है।

बोध प्रश्न 4

1) स्थानीय प्रथाओं पर पर्यटन का क्या प्रभाव पड़ता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या आप समझते हैं कि मेजबान संस्कृति पर पड़ने वाला सकारात्मक प्रभाव नकारात्मक प्रभाव से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

24.6 सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि पर्यटन रोजगार और आय उत्पन्न करके, आर्थिक ढाँचे में सुधार लाकर और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करके निश्चित रूप से कुछ आर्थिक लाभ उपलब्ध कराता है। किंतु दूसरी ओर इसके कारण वस्तुओं और अचल सम्पत्ति की कीमतें बढ़ जाती हैं, और पर्यटन का सबसे अधिक क्षुब्ध कर देने वाला पक्ष स्थानीय प्रथाओं और परम्पराओं पर पड़ने वाला उसका नकारात्मक प्रभाव है। अगर हम पर्यटन के प्रतिकूल सामाजिक प्रभावों को देखें तो कुल मिलाकर पर्यटन के कारण होने वाले आर्थिक लाभ बहुत कम दिखाई देता है। मेजबान संस्कृतियों की वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर ही सावधानीपूर्वक योजना बनाना पर्यटन विकास का सही तरीका है।

24.7 शब्दावली

सैलानी/पर्यटक : स्वेच्छा से अस्थाई तौर पर इस आशा में अपेक्षाकृत लम्बी यात्रा करने वाला कि वह यात्रा के अनुभव से आनन्द उठा सकेगा।

आतिथेय/स्थानीय जनसमुदाय : उस स्थान की जनसंख्या जिसे पर्यटक सैरगाह के रूप में पसन्द करता है।

24.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 24.2.1

2) देखिए उपभाग 24.2.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 24.3.1

2) देखिए उपभाग 24.3.2

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 24.4.1

2) देखिए उपभाग 24.4.2

3) देखिए उपभाग 24.4.3

बोध प्रश्न 4

1) देखिए उपभाग 24.5.1

2) देखिए उपभाग 24.5.1, 24.5.2, एवं 24.5.3